M. Com. II^nd Semester
Paper IV^th (B)
Subject ⇒ Security Analysis and portfolio Mgmt.

lecture By:- Mr. Vikas Maurya
Assistant professor
Department of commerce
Nehru Gram Bharati
(Deemed to be University)
Prayagraj.

Topic:- Secondary market.

गौण बाजार :⇒

गौण बाजार वे बाजार होते हैं जहां पर विद्यमान प्रतिभूतियों को खरीदा या बेचा जाता है। स्टॉक बाजार गौण बाजार का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां पर विद्यमान प्रतिभूतियों (अंश व ऋण पत्रों) में व्यापार होता है।

स्कन्ध विपणि (Stock Exchange) :⇒

स्कन्ध विपणि एक संगठित यान्त्रिकी को प्रदान करती है जहां पर विद्यमान प्रतिभूतियों को खरीदा और बेचा जाता है।

हार्टले विदर्स के अनुसार," स्कन्ध विपणि एक विशाल संग्रहागार की भांति होता है जहां प्रतिभूतियां दराज से निकालकर पटल (खिड़की) पर मूल्य-सूची में दिये हुए एक निश्चित मूल्य पर, जिसे आधिकारिक सूची कहते हैं, बेची जाती है।

Scanned with CamScanner

स्कन्ध विपणि की विशेषताएँ :-

1. यह वह स्थान है जहाँ प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है।
2. स्कन्ध विपणियाँ व्यक्तियों का ऐसा संघ है जो समामेलित हो सकता है अथवा नहीं।
3. स्कन्ध विपणियों में किये गये व्यापार का कड़ाई से नियमन किया जाता है और विभिन्न लेन-देनों के लिए निर्धारित नियम और विनियम होते हैं।
4. स्कन्ध विपणियों में वास्तविक विनियोक्ता एवं सट्टेबाजी करने वाले दोनों ही प्रकार के निवेशक अंशों व ऋणपत्रों का क्रय व विक्रय करते हैं।
5. स्कन्ध विपणियों में निगम, प्रन्यास, सरकार, नगर पालिका निगम, आदि की प्रतिभूतियों में व्यवहार करने की अनुज्ञप्ति होती है।

स्कन्ध विपणियों के कार्य :-

1. पूँजी की तरलता सुनिश्चित करना
2. प्रतिभूतियों के लिए अविच्छिन्न बाजार
3. प्रतिभूतियों का मूल्यांकन
4. अतिरिक्त बचतों को गतिशील करना
5. प्रतिभूतियों का सूचीयन
6. नयी पूँजी जुटाने में सहायक
7. सार्वजनिक ऋण का मंच

प्रतिभूतियों का सूचीयन (Listing of Securities) :-

प्रतिभूतियों के सूचीयन से तात्पर्य स्कन्ध विपणियों में लेन-देन के पटल पर अंशों और ऋणपत्रों के आधिकारिक उद्धरण की अनुमति

Scanned with CamScanner

मिलने से है। विभिन्न कम्पनियों द्वारा निर्गमित प्रत्येक प्रतिभूति का स्कन्ध विपणियों में व्यापार नहीं किया जा सकता है। केवल उन्हीं प्रतिभूतियों का यहाँ लेन-देन किया जा सकता है जो सूचीबद्ध हों।

सूचीयन के लिए अनिवार्यताएँ :-

प्रतिभूति को सूचीबद्ध कराने के लिए निम्नलिखित सूचनाओं को स्कन्ध विपणि में जमा करना आवश्यक है :-

(i) पार्षद सीमानियम एवं अन्तर्नियम तथा ऋणपत्र की स्थिति में न्यास लेख।
(ii) सभी जारी किये गये विवरणों अथवा स्थानापन्न प्रतिवरणों की प्रतिलिपियाँ।
(iii) आर्थिक चिट्ठे, अंकेक्षित लेखे, प्रवर्तकों, अभिगोपकों, दलालों आदि के साथ किये गये अनुबन्धों की प्रतिलिपियाँ।
(iv) निर्गमित किये गये अंशों और ऋणपत्रों तथा जलत किये गये अंशों का विवरण।
(v) कम्पनी का संक्षिप्त इतिहास।
(vi) प्रत्येक प्रकार की प्रतिभूतियों के दस बड़े अंशधारियों की सूची जिनके पास सबसे अधिक अंश हों।
(vii) प्रबन्ध संचालक, एवं प्रबन्धकों, आदि के साथ किये गये अनुबन्धों की प्रतिलिपियाँ।

सूचीयन के उद्देश्य :-

1. प्रतिभूतियों के व्यापार में सही निरीक्षण एवं नियंत्रण को सुनिश्चित करना।
2. अंशधारियों एवं निवेशकों के हितों की रक्षा।
3. आर्थिक शक्ति के केन्द्रीयकरण को रोकना।
4. प्रतिभूतियों के लिए विपणन सुविधाओं को सुनिश्चित करना।
5. प्रतिभूतियों की तरलता को निश्चित करना।
6. प्रतिभूतियों के व्यापार को विनियमित करना।

Scanned with CamScanner

स्कन्ध विपणि में व्यवहार करने की कार्यविधि :⇒

1. दलाल का चयन
2. आदेश देना
3. प्रसंविदा करना
4. प्रसंविदा नोट
5. निपटारा
6. व्यापार का इलेक्ट्रानिक
7. सैटलिंग निपटारा

स्कन्ध विपणि में परिचालक :⇒

1. जॉबर्स :⇒

जॉबर स्वतन्त्र परिचालक के रूप में अंशों व ऋणपत्रों का व्यवहार करने वाले प्रतिभूति व्यापारी होते है जो वास्तव में प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय करते है। जॉबर जन साधारण की ओर से व्यवहार नहीं करते और इन लोगों द्वारा कमीशन लेने पर प्रतिबन्ध है। ये सीधे दलालों के साथ व्यवहार करते हैं जो जन-साधारण की ओर से लेन-देन या व्यवहार करते है।

2. दलाल :⇒

दलाल वे कमीशन एजेण्ट होते है जो प्रतिभूतियों के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के बीच मध्यस्थ की हैसियत से कार्य करते है। वे प्रतिभूतियों के क्रेताओं और विक्रेताओं को एक दूसरे के निकट लाने का कार्य करते हैं और इन दोनों के बीच सौदा तय करने में सहायता पहुँचाते है। ये दोनों ही पक्षों से अपनी सेवाओं के लिए कमीशन लेते है।

स्टॉक दलाल के कर्तव्य :⇒

स्टॉक दलालों के कार्यों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :-

Scanned with CamScanner

(A) सामान्य कर्तव्य :=

(i) ईमानदार
(ii) समझदारी एवं सूझबूझ से कार्य करना
(iii) जालसाजी, धोखाधड़ी आदि में सम्मिलित न होना
(iv) दुराचार न करना
(v) वैधानिक अनिवार्यताओं की पूर्ति

(B) विनियोक्ताओं के प्रति कर्तव्य :=

1. आदेशों का पालना
2. अनुबंध विवरण को निर्धारित करना
3. दोषी ग्राहकों के साथ व्यवसाय न करना
4. विश्वास भंग न करना
5. विनियोग सलाह देना
6. मीडिया में विनियोग सलाह

(C) अन्य दलालों के प्रति कर्तव्य :=

1. ग्राहकों के हितों की सुरक्षा
2. स्टॉक दलालों के साथ व्यवहार
3. विज्ञापन तथा प्रचार न करना
4. ग्राहकों को प्रलोभन न देना

3. उप - दलाल :=

उप - दलाल, मूल स्टॉक का ही एजेण्ट होता है या यह एक ऐसा व्यक्ति है जो स्टॉक दलाल के साथ व्यवहार करने में विनियोक्ता की सहायता करता है। एक उप-दलाल पंजीकरण के लिए आवेदन करना होता है, किसी सूचीबद्ध स्कन्ध विपणी के दलाल से अनुशंसा पत्र प्राप्त करना होता है। इसके अलावा उसे दो संदर्भ देने होते हैं जिनमें से एक संदर्भ उसके बैंक का होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

4. तरावनीवाला :=

तरावनीवाला प्रत्येक सौदे को अपनी ओर से करता है लेकिन वह ऐसे प्रदर्शित करता है जैसे जनता की ओर से कर रहा है। ये लाभों को कमाने के लिए गलत तरीके भी अपनाते हैं। जब प्रतिभूतियों का मूल्य बढ़ जाते हैं तब वे ग्राहकों को अपनी ही प्रतिभूतियाँ बेच देते हैं, प्रतिभूतियों के मूल्य गिरने की स्थिति में वे ग्राहकों की प्रतिभूतियाँ को खरीद लेते हैं।

सट्टेबाजों के प्रकार :=

सट्टेबाज निम्न चार प्रकार के होते हैं :=

1. तेजड़िया या तेजीवाला :=

तेजड़िया (Bull) या तेजीवाला एक ऐसा परिकल्पक या सटोरिया होता है जो भविष्य में प्रतिभूतियों के मूल्यों में वृद्धि की आशा रखता है। मूल्य में वृद्धि की सम्भावना से वह अंशों और अन्य प्रतिभूतियों को इस उद्देश्य से खरीदता है कि उन्हें भविष्य में ऊंचे मूल्यों पर बेच देगा।

2. मंदड़िया (Bear) :=

मंदड़िया या मंदीवाला परिकल्पक वह है जो भविष्य में मूल्यों में गिरावट की आशा रखता है और भविष्य में कम मूल्यों पर प्रतिभूतियों को क्रय करने के उद्देश्य से वर्तमान में प्रतिभूतियों की बिक्री करता है।

Scanned with CamScanner

3. **ख्याली अथवा चंचल परिकल्पक :-** ख्याली या चंचल परिकल्पक किसी नयी कम्पनी की पूंजी निर्गमित होने पर उसके अंशों के लिए इस आशा में आवेदन कर देता है कि उनका आवंटन होने तक अथवा उसके शीघ्र बाद ही उनका मूल्य बढ़ जायेगा और वह उन्हें उस बढ़े हुए मूल्य पर बेच लेगा। चंचल परिकल्पक तेजड़िया और मन्दड़िया की भाँति बाजार में न तो अंशों का क्रय करता है और न बेचता है। वह केवल अपने नाम से अंशों के आवेदन पर भरोसा करता है।

4. **संघर्षशील परिकल्पक :-** जब कोई मंदड़िया दिये गये वचनों की पूर्ति करने में स्वयं को कठिनाई में पाता है तब उसे संघर्षशील परिकल्पक कहते हैं।

स्कन्ध विपणि में मूल्यों को प्रभावित करने वाले घटक :-

1. कम्पनी की वित्तीय स्थिति
2. माँग एवं पूर्ति स्थिति
3. वित्तीय संस्थाओं की भूमिका
4. उधार की दर
5. व्यापार चक्र
6. सट्टेबाजी की क्रियायें
7. सरकारी नियंत्रण

Scanned with CamScanner